

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 18, 18 वीं और 19 वीं शताब्दी का कैथोलिक धर्म

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 18 है, 19वीं शताब्दी का कैथोलिक धर्म।

ठीक है, हम पाठ्यक्रम के पृष्ठ 14 पर हैं। ओह, और यह मत भूलिए कि हम शुक्रवार और सोमवार को नहीं मिल रहे हैं, इसलिए आपको इस कक्षा में एक अच्छा ब्रेक मिलेगा। इसे मत भूलिए। तो, एक अच्छा ब्रेक लें, और यह वह मौका हो सकता है जिसे आप इस कोर्स के लिए पेपर करने के लिए लेना चाहेंगे।

लेकिन आप जो भी करने का फैसला करें। इसलिए, मैंने अपना नोट यहाँ बना लिया है ताकि मैं आपको बताना न भूलूँ। हम पाठ्यक्रम के पृष्ठ 14 पर हैं, और हम इस व्याख्यान को इस सप्ताह शुरू करने वाले हैं।

तो, हम सही निशाने पर हैं। हम वहीं हैं जहाँ हमें होना चाहिए। तो हम इस पर खुश हैं, है न? तो, हम खुश हैं।

तो, अब हम थोड़ा बदलाव करने जा रहे हैं क्योंकि पिछले व्याख्यान में हमने 19वीं सदी में इंगीलवाद के बारे में बात की थी। उस व्याख्यान में हमने इंगीलवाद के दो चरम रूप देखे थे। हमने एंग्लिकन चर्च के भीतर इंगीलवाद देखा।

और यह, ज़ाहिर है, रोमन कैथोलिक धर्म में चला गया। फिर, हमने साल्वेशन आर्मी में जिसे हम लो चर्च आंदोलन कहते हैं, उसमें इंगीलवाद देखा। तो, हमने दो चरमपंथ देखे।

अब, यह बहुत स्वाभाविक है कि यह व्याख्यान व्याख्यान संख्या नौ, 19वीं शताब्दी में रोमन कैथोलिक धर्म के धर्मशास्त्र के बाद आता है। तो, हम देखेंगे कि ऑक्सफोर्ड आंदोलन के अलावा रोमन कैथोलिक चर्च में क्या हुआ। अब, ऑक्सफोर्ड आंदोलन में कई लोग, निश्चित रूप से, रोमन कैथोलिक बन गए।

हालाँकि, 19वीं सदी में रोमन कैथोलिक चर्च का अपना अलग इतिहास रहा। और यही हमें देखना है। इसलिए, हम एक परिचय देने जा रहे हैं।

मैं इसके परिचय में तीन बातें कहना चाहता हूँ। और फिर हम 19वीं सदी में पोप के शासन के बारे में बात करना चाहते हैं क्योंकि वह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण था। तो हम उसके बारे में बात करेंगे।

और फिर, हम 19वीं सदी के तीन प्रमुख रोमन कैथोलिक सिद्धांतों के बारे में बात करेंगे। वैसे, एक सिद्धांत तो 20वीं सदी का है, लेकिन मैंने इस पर अभी व्याख्यान देना चुना है क्योंकि यह उचित लगता है। तो, हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे।

तो ठीक है। ठीक है। तो, सबसे पहले, एक परिचय।

19वीं सदी में और खास तौर पर यूरोप में ऐसा क्या हो रहा है, जो रोमन कैथोलिक चर्च को थोड़ा दुखी कर रहा है? खैर, यहाँ तीन चीज़ें हो रही हैं। 19वीं सदी में जो पहली चीज़ हुई, वह थी धर्मनिरपेक्ष संस्कृति से धार्मिक प्रभाव का अलग होना। चर्चों का जो धार्मिक प्रभाव था, सदियों से चर्चों का जो प्रबल धार्मिक प्रभाव था, अब धर्मनिरपेक्ष संस्कृति पर चर्च का वह प्रभाव नहीं रह गया है।

उदाहरण के लिए, रोमन कैथोलिकों को एक बात हैरान करने वाली लगी कि शिक्षा पर धर्मनिरपेक्ष नियंत्रण बढ़ गया है। मध्ययुगीन दुनिया में, शिक्षा चर्च के तत्वावधान में आती थी, और विश्वविद्यालय चर्च और कैथेड्रल के तत्वावधान में थे। अब ऐसा नहीं हो रहा है।

तो, अब आप जीवन के विभिन्न पहलुओं पर धार्मिक प्रभाव को अलग-अलग देख रहे हैं, और शिक्षा इसका एक अच्छा उदाहरण है। तो, यह रोमन कैथोलिक चर्च के लिए बहुत दुख और बहुत सारी समस्याएँ पैदा करने वाला है। इसलिए हम पहली बात को याद रखना चाहते हैं।

ठीक है, दूसरी बात वह है जिसका हमने यहाँ काफी ज़िक्र किया है, लेकिन वह है विज्ञान का उदय। 19वीं सदी में विज्ञान का उदय 19वीं सदी में बहुत से धार्मिक लोगों के लिए काफ़ी समस्याजनक हो गया। इसलिए, जीव विज्ञान, भूविज्ञान, नृविज्ञान, इत्यादि के साथ विज्ञान का उदय।

और खास तौर पर, बेशक, 1859 में डार्विनवाद आया, और प्रजातियों की उत्पत्ति, और डार्विनवाद ने ऊपर से सृजन के बजाय प्राकृतिक चयन द्वारा सृजन का प्रस्ताव करना शुरू किया। इसलिए, जहाँ चर्च ने हमेशा ऊपर से सृजन, ईश्वर द्वारा सृजन की शिक्षा दी थी, वहीं डार्विनवाद आया और प्राकृतिक चयन द्वारा सृजन की बात की। लेकिन यह सिर्फ डार्विनवाद ही नहीं था जिसने समस्या पैदा की, बल्कि यह पूरी तरह से सुझाव था कि जीवन के सबसे बड़े सवालों का जवाब अब विज्ञान द्वारा दिया जा सकता है।

तो, विज्ञान जीवन के सवालों का जवाब देने में सक्षम है। अब, धर्म और रोमन कैथोलिक धर्म के बारे में, हम यहाँ रोमन कैथोलिक चर्च के साथ एक मिनट के लिए रुकेंगे। रोमन कैथोलिक चर्च को इसकी आदत नहीं थी।

वे धर्म और रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा जीवन के महान प्रश्नों के उत्तर देने के आदी थे। वे रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा जीवन के दार्शनिक मुद्दों और जीवन के प्रश्नों आदि पर हावी होने और उनका उत्तर देने के आदी थे। अब हमारे पास एक अलग कहानी है।

विज्ञान ने कहानी में प्रवेश किया है और उन सवालों के जवाब अलग दृष्टिकोण से दे रहा है। तो फिर धर्म का क्या होगा? धर्म हाशिए पर चला जाता है। वैज्ञानिक प्रयासों के कारण धर्म को जीवन के केंद्र से बाहर कर दिया जाता है।

तब से, हम खुद से यह सवाल पूछने की कोशिश कर रहे हैं: धर्म और विज्ञान के बीच क्या संबंध है? क्या आप में से किसी ने ओवेन गिंगरिच को सुना था जब वह यहां थे? उन्होंने तीन शानदार व्याख्यान दिए, और वे हार्वर्ड के प्रोफेसर, खगोलशास्त्री, खगोलशास्त्री और आज दुनिया के प्रमुख वैज्ञानिकों में से एक के रूप में विज्ञान और धर्म के बीच के बहुत ही दिलचस्प संबंध पर चर्चा कर रहे थे। लेकिन धर्म और विज्ञान के बारे में उनकी राय सुनना बहुत दिलचस्प था, जो जरूरी नहीं कि दो अलग-अलग संस्थाएं हों जिन्हें समानांतर पटरियों पर चलना पड़े, लेकिन धर्म और विज्ञान का आदान-प्रदान हो सकता है। लेकिन अभी, 19वीं सदी में, धर्म वास्तव में 19वीं सदी के जीवन के केंद्र से बाहर धकेल दिया गया है, और यह एक तरह से हाशिये पर है।

तो यह दूसरी बात बहुत महत्वपूर्ण है। ठीक है, तीसरी बात जो वास्तव में परिचय के रूप में महत्वपूर्ण है वह है पश्चिम का औद्योगिकीकरण। पश्चिम का औद्योगिकीकरण एक तरह से हावी हो रहा है, और इससे बहुत सारी समस्याएं पैदा होने वाली हैं।

तो अब तक, हम एक तरह से कृषि प्रधान समाज थे, और अब 19वीं सदी में पश्चिमी दुनिया के औद्योगिकीकरण के साथ जो हो रहा है वह यह है कि लोग शहरों की ओर जा रहे हैं, शहरों में नौकरियाँ पैदा हो रही हैं, और शहर औद्योगिक हो रहे हैं, और लोग औद्योगिक हो रहे हैं। इसलिए, शहर में आने वाले बहुत से लोगों को धर्म की कोई विशेष आवश्यकता महसूस नहीं होती, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। उनके पास अपनी नौकरियाँ हैं, उनके पास अपना काम है, उनके पास अपना परिवार है, लेकिन धर्म उनके लिए एक तरह से हाशिए पर चला जाता है।

इसके अलावा, चर्च, अब हम सिर्फ रोमन कैथोलिक चर्च के साथ रहेंगे, लेकिन चर्च को नहीं पता था कि शहरों में लोगों और शहरों में लोगों की समस्याओं से कैसे निपटना है। और इसलिए, बहुत से लोगों के लिए, पश्चिम के औद्योगिकीकरण के साथ, बहुत से लोगों के लिए चर्च अप्रचलित हो गया है। हमें चर्च की ज़रूरत नहीं है; हमें किसी धर्म की ज़रूरत नहीं है, और हमें अब चर्च के उपदेशों की ज़रूरत नहीं है।

यह औद्योगिक पश्चिम की ज़रूरतों को पूरा नहीं करता। इसलिए, ये तीन चीज़ें इस सबका परिचय हैं क्योंकि इन तीन क्षेत्रों को समझे बिना रोमन कैथोलिक चर्च को समझना मुश्किल है। धर्म का अलगाव और हाशिए पर होना, विज्ञान का वह तरीका जिसके ज़रिए जीवन की बड़ी समस्याओं का समाधान किया जाता है और जीवन के उत्तर दिए जाते हैं, और इसलिए धर्म का हाशिए पर होना, और तीसरा, औद्योगिकीकरण।

तो, आइए उन तीन चीज़ों को याद करने की कोशिश करें क्योंकि अब हम 19वीं सदी में रोमन कैथोलिक चर्च और वहां क्या हो रहा है, में आगे बढ़ते हैं। यह इस कारण का एक हिस्सा है कि शहर के लोग अपनी जीवनशैली में लोगों के साथ व्यवहार नहीं करते थे; आपको कम दान मिलता है क्योंकि आप उस भूमि पर निर्भर होते हैं जिस पर आप उत्पादन कर रहे हैं, और

आपको भगवान में विश्वास रखने की आवश्यकता होती है, लेकिन औद्योगिक नौकरी के लिए अब यही सब काम है। और फिर औद्योगिक, औद्योगीकरण के साथ, अब हम एक तरह से नियंत्रण करते हैं।

हम ईश्वर को प्राकृतिक दुनिया और हमारे जीवन को नियंत्रित करते हुए नहीं देखते हैं, और कृषि जीवन में, चर्च गांव का केंद्र था, आप जानते हैं। अब आप 19वीं सदी में इंग्लैंड के औद्योगिक शहरों जैसे महान औद्योगिक शहरों में जाते हैं, और लोग यह सोचना शुरू कर देते हैं कि मैं जो काम कर रहा हूँ, उससे मैं अपने जीवन को नियंत्रित कर रहा हूँ, और मैं कारखाने में काम कर रहा हूँ, और कारखाना माल का उत्पादन कर रहा है, और लोग माल खरीद रहे हैं, इसलिए मैं पैसा कमा रहा हूँ, तो मुझे इसके लिए चर्च की क्या ज़रूरत है? चर्च इसमें कहाँ फिट बैठता है? 19वीं सदी में इन महान औद्योगिक, पश्चिमी औद्योगिक शहरों में चर्च वास्तव में हाशिए पर चला गया। इसलिए, मुझे लगता है कि ईश्वर पर निर्भरता की कमी, जिसे वे पहले अधिक कृषि समाज में जानते थे, सच है।

ठीक है, अगर हम उन तीन बातों को ध्यान में नहीं रखते हैं, तो हम रोमन कैथोलिक चर्च में जो कुछ हो रहा है उसके लिए कारण नहीं बता पाएँगे। तो यह हमें स्वाभाविक रूप से अब पोपसी की ओर ले जाता है। तो, अगर आप पाठ्यक्रम के पृष्ठ 14 पर हैं, 19वीं सदी में पोपसी, और हम दो पोप के बारे में बात करने जा रहे हैं।

हम पोप पायस IX के बारे में बात करने जा रहे हैं, और हम पोप लियो XIII के बारे में बात करने जा रहे हैं। ठीक है, तो दो पोप। सबसे पहले, पोप पायस IX।

यहाँ वह है। वैसे, वह बाईं ओर है। तो यह बाईं ओर पोप पायस IX है, और हम दाईं ओर पोप लियो XIII के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन पोप पायस IX 1846 से 1878 तक पोप थे।

पोप के रूप में बहुत, बहुत लंबा समय, पोप के पद पर बहुत लंबा समय। तो ठीक है, अब मैं सिर्फ एक कार्टून का जिक्र करना चाहता हूँ, और मैं कभी भी कार्टून नहीं ढूँढ़ पाया, इसलिए मैं उसे ढूँढ़ता रहूँगा, और शायद आप लोग किसी दिन अपने कंप्यूटर पर उसे ढूँढ़ पाएँ। लेकिन एक अद्भुत कार्टून था।

कई साल पहले, मैंने इसे देखा था, और यह एक कार्टून था जिसमें सिर्फ दो तस्वीरें थीं। बाईं ओर की तस्वीर एक छड़ी की आकृति थी, पोप पायस IX की तस्वीर, और इसमें उन्हें एक खिड़की पर खड़े दिखाया गया था, एक बड़ी खिड़की पर खड़े होकर, और इसमें उन्हें खिड़की के पर्दे बंद करते हुए दिखाया गया था। और अगर कोई ऐसी चीज़ है जो पोप पायस IX के पोपत्व को इंगित करती है, तो वह यही है।

मैं दुनिया को बाहर कर रहा हूँ। मैं दुनिया की सभी समस्याओं पर से पर्दा हटा रहा हूँ। और यह उनकी पोपशाही की पहचान बन गई, जैसा कि हम थोड़ी देर में उनकी पोपशाही के बारे में बात करते समय देखेंगे।

अगली तस्वीर, इसके ठीक बगल वाली तस्वीर, पोप लियो XIII की है। पोप लियो XIII उसी खिड़की के सामने खड़े हैं, लेकिन जब वे पोप बनेंगे, तो हम आपको बताएंगे। दरअसल, मैं आपको अभी उनकी तारीखें बता सकता हूँ। हम उनके बारे में अलग से बात करेंगे, लेकिन मैं आपको अभी उनकी तारीखें बता दूँगा।

उन्होंने पोप पायस IX का अनुसरण किया। इसलिए, जब वे 1878 में पोप बने, तो वे उसी खिड़की के सामने खड़े थे, वे पर्दे हटा रहे थे, और वे पर्दे खोल रहे थे क्योंकि वे चाहते थे कि चर्च दुनिया को देखे और दुनिया के लिए प्रासंगिक हो और इसी तरह। इसलिए, अगर कोई ऐसी चीज है जो इन दोनों पोपों को अलग करती है, तो वह यही है।

पायस IX ने दुनिया के पर्दे बंद कर दिए, और लियो XIII ने दुनिया के पर्दे खोल दिए। यह दिखाने का एक बहुत ही दिलचस्प तरीका था कि ये दोनों पोप क्या थे। लेकिन अभी के लिए, आइए पोप पायस IX को लें और कुछ मिनटों के लिए उनके बारे में बात करें।

तो, ठीक है। अब, मैंने एक बहुत बढ़िया पैराग्राफ पढ़ा है, और मैंने इसे नोट कर लिया है, तो मुझे पैराग्राफ पढ़ने दीजिए। यह एक छोटा पैराग्राफ है, लेकिन फिर मैं इस पर वापस आऊंगा क्योंकि यह बहुत बढ़िया है।

पोप पायस IX का मुख्य कार्य कई गैर-ईसाई और ईसाई-विरोधी दार्शनिक या सामाजिक आंदोलनों से अलग, धार्मिक कैथोलिक आस्था और व्यवहार की पहचान और प्रचार करना है। अब, यह एक महान... वास्तव में, यह सिर्फ एक वाक्य है। हाँ, सिर्फ एक वाक्य।

इसलिए, मैं वाक्य को दोहराना नहीं चाहता, लेकिन मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि उनके पोपत्व की विशेषता एक धर्मनिष्ठ रोमन कैथोलिक धर्म की पहचान करना था। स्पष्ट रूप से, पोप के रूप में, यही उनका काम था। वह एक बहुत ही धर्मनिष्ठ रोमन कैथोलिक चर्च और चर्च के लोगों के रोमन कैथोलिक जीवन की पहचान करना चाहते थे क्योंकि उन्हें लगा कि गैर-ईसाई और सामाजिक आंदोलन दोनों ही चर्च को गिराने की कोशिश कर रहे थे।

इसलिए, उनका वास्तव में मानना था कि ये आंदोलन कैथोलिक चर्च को कमजोर करने की कोशिश कर रहे थे। अब, मुझे बस इतना कहना चाहिए कि पोप पायस IX के लिए, कैथोलिक चर्च ही चर्च था। उन्होंने दूसरों को स्वीकार नहीं किया... प्रोटेस्टेंटवाद या पूर्वी रूढ़िवादी को स्वीकार नहीं किया।

वह चर्च है। इसलिए, जहाँ तक उनका सवाल है, ये आंदोलन चर्च को कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए, अगर कोई ऐसी चीज़ है जो उनके कार्य, उनके लक्ष्य, उनके मिशन को पहचानती है, तो वह यही है।

आइए हम इन आंदोलनों के सामने रोमन कैथोलिक धर्म को पुनः स्थापित करें जो हमें नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर रहे हैं। अब, जब चर्च के उन दुश्मनों की बात आती है जो चर्च को कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं, तो हमें यह याद रखने की ज़रूरत है कि मूल रूप से, विशेष रूप से राज्य के संबंध में, रोमन कैथोलिक चर्च एक हजार साल तक बहुत शक्तिशाली

रहा है। वास्तव में, एक हजार से अधिक वर्षों तक, रोमन कैथोलिक चर्च एक ऐसी शक्ति थी जिसे बहुत गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

इसके पास बहुत ज़्यादा ज़मीन थी। इसके पास सेनाएँ थीं। इसने नागरिक नेताओं को नियुक्त किया।

तो, याद रखें कि रोमन कैथोलिक चर्च कितना शक्तिशाली था। अब, आप 19वीं सदी में आते हैं। पोप पायस IX एक हजार साल या 1200 साल पीछे देखता है, और वह पूछता है कि हमारे साथ क्या हुआ। हम वैसे नहीं हैं जैसे हम हुआ करते थे। हमारे पास वह शक्ति नहीं है जो हमारे पास हुआ करती थी।

हमारे पास पहले जैसा नियंत्रण नहीं है। तो हम कहाँ हैं, और हम अब यहाँ क्यों हैं? तो लंबी कहानी को संक्षेप में कहें तो, उन्होंने चर्च के चार दुश्मनों, चार सामाजिक दुश्मनों की पहचान की। तो चलिए मैं आपको उनका ज़िक्र करता हूँ।

नंबर एक, उदारवाद। खैर, उदारवाद पोप पायस IX के लिए एक समस्या थी, जो 19वीं सदी में आए एक अधिक उदार समाज और अधिक उदार धर्मशास्त्र थे। इसलिए, उदारवाद निश्चित रूप से पोप पायस IX के लिए एक समस्या है।

दूसरा नंबर 19वीं सदी में उभरता लोकतंत्र है। हम इसे 18वीं सदी में अमेरिकी क्रांति के दौरान अमेरिका में सत्ता में आते देख चुके हैं। फिर, 18वीं सदी के अंत में, हमने फ्रांसीसी क्रांति देखी।

अब, आप 19वीं सदी में आ गए हैं, और यहाँ लोकतांत्रिक भावना बढ़ रही है। खैर, लोकतांत्रिक भावना पोपशाही के खिलाफ़ बोलती है, है न? क्योंकि पोपशाही कोई लोकतांत्रिक मशीन नहीं है। यह एक अखंड पदानुक्रमित मशीन है।

तीसरा नंबर है बुद्धिवाद। विज्ञान का उदय, दर्शन का उदय, सही और गलत, सत्य और असत्य का निर्धारण करने के लिए मन का उपयोग, इत्यादि। तो, बुद्धिवाद का उदय हुआ, या दूसरे शब्दों में, 17वीं और 18वीं शताब्दी की विरासत।

तो, बुद्धिवाद का उदय। यदि आपका जीवन पूरी तरह से तर्कसंगत है, तो क्या आत्मा के लिए कोई जगह है? क्या रहस्य के लिए कोई जगह है? क्या रहस्य के लिए कोई जगह है? क्या ईश्वर के लिए कोई जगह है? यदि आप पूरी तरह से तर्कसंगत जीवन जी रहे हैं, तो क्या आस्था के लिए कोई जगह है? तो, नंबर तीन है बुद्धिवाद। ठीक है, नंबर चार है पादरी-विरोधी, 19वीं शताब्दी में पादरी-विरोधी तरह का माहौल, जिसका मतलब है, ज़ाहिर है, पोपसी के खिलाफ़, पुरोहितवाद के खिलाफ़, स्थापित धार्मिक नेताओं के खिलाफ़।

तो 19वीं सदी में पादरी-विरोधी भावना आई और काफी मजबूत हो गई, और अब आपके सामने एक समस्या है। तो, ये चार ताकतें हैं: उदारवाद, लोकतंत्र, तर्कवाद और पादरी-विरोधी भावना। और उन्हें लगा कि ये चार ताकतें चर्च को गिरा रही हैं।

और उसे इस बारे में कुछ करना होगा। ठीक है? तो, हाँ। इसे अन्य अधिकारियों ने भी महसूस किया, लेकिन रोमन कैथोलिक अधिकारियों के लिए यह सबसे ज़्यादा मुश्किल था क्योंकि इसकी शुरुआत पोप के पद से हुई थी और पोप के पद को एक उचित पद और चर्च चलाने के उचित तरीके के रूप में चुनौती दी गई थी।

क्या चर्च को इस तरह के पदानुक्रमिक तरीके से चलाना सही है? क्या पोप रखना सही है? आपको किस अधिकार से पोप रखना है? और इसी तरह की बातें। तो, इसने रोमन कैथोलिक चर्च को प्रोटेस्टेंटिज्म में अन्य, हम कहें, लोकतांत्रिक आंदोलनों की तुलना में अधिक प्रभावित किया क्योंकि प्रोटेस्टेंटिज्म में कुछ भी शीर्ष पर एक पोप द्वारा संचालित नहीं किया गया था। इसलिए इसने चर्च को बहुत अधिक प्रभावित किया।

हाँ। लेकिन अगर आप 18वीं सदी के कुछ दार्शनिकों के बारे में बात करें, जिनका हमने ज़िक्र किया है, तो वे किसी भी तरह के पादरी के प्रति बहुत सख्त थे, क्योंकि वे संस्थागत चर्च के प्रति बहुत सख्त थे, चाहे वह कहीं भी हो। लेकिन मुख्य रूप से कैथोलिक चर्च ही सबसे ज़्यादा प्रभावित हुआ है।

ठीक है। तो हमारे सामने समस्याएँ हैं। चर्च हाशिए पर है।

चर्च बिखर रहा है। चर्च के सभी लोग चर्च पर हमला कर रहे हैं। तो, हम इसके बारे में क्या करने जा रहे हैं? वह इसके बारे में क्या करता है कि पोप पायस IX ने 19वीं सदी में एक बहुत ही मजबूत आंदोलन की स्थापना की, और इस आंदोलन को अल्ट्रामोंटानिज़्म कहा जाता है।

यहाँ सूची में यह अंतिम शब्द है। अल्ट्रामोंटानिज़्म। अब, अल्ट्रामोंटानिज़्म का शाब्दिक अर्थ है पहाड़ों से परे।

दरअसल, हमारे यहाँ पहाड़ हैं। मैंने इसके बारे में सोचा भी नहीं था। लेकिन वैसे भी, हमारे यहाँ कुछ पहाड़ हैं।

पहाड़ों से परे। तो, अल्ट्रामोंटानिज़्म, पहाड़ों से परे, इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि पश्चिमी यूरोप के लोगों को पहाड़ों से परे रोम और पोपसी की ओर देखना चाहिए। अगर वे वास्तव में सच्चा चर्च देखना चाहते हैं, तो रोम को देखें, पोपसी को देखें।

अल्ट्रामोंटानिज़्म, बस इसे एक परिभाषा देने के लिए, पोपसी के प्रति निष्ठा का आह्वान है। और अगर आप पोपसी के प्रति निष्ठा प्राप्त कर सकते हैं, तो आप चर्च, मदर चर्च के प्रति निष्ठा प्राप्त कर सकते हैं। जहाँ तक उनका सवाल था, यह एक लड़ाई थी।

इसलिए, जिस दुनिया में हम रह रहे हैं, उसका मुकाबला करने के लिए उन्होंने अल्ट्रामोंटानिज़्म की स्थापना की। अल्ट्रामोंटानिज़्म एक ऐसा आंदोलन था जो खिड़की पर लगे पर्दे बंद कर देता था और सिर्फ चर्च के अंदर की ओर देखता था। उस दुनिया की ओर बाहर की ओर मत देखो, बल्कि अंदर की ओर देखो।

चर्च को अंदर से देखें। तो, मैं बस कुछ ऐसी बातें बताना चाहता हूँ जो इस अल्ट्रामोंटानिज़्म की पहचान कराती हैं। कुछ ऐसी बातें जो पोप के प्रति निष्ठा और चर्च के प्रति निष्ठा देंगी।

सबसे पहले मैं एक सिद्धांत का उल्लेख करने जा रहा हूँ, और मैं यहाँ इसका उल्लेख करने जा रहा हूँ। ध्यान दें कि जब वे पोप बने, और अब 1854 में सिद्धांत की घोषणा की गई है। मैं यहाँ इसका उल्लेख इसलिए करना चाहता हूँ क्योंकि हमने व्याख्यान में बाद में इस सिद्धांत के बारे में बात की थी।

लेकिन यह सिद्धांत मरियम के बेदाग गर्भाधान का सिद्धांत है। कि मरियम का गर्भाधान बेदाग था। ठीक है।

तो, यह निश्चित रूप से मरियम की ओर ध्यान आकर्षित करेगा और एक तरह से मरियम के प्रति एक तरह का पवित्र ध्यान आकर्षित करेगा। तो हम देखेंगे कि यह सिद्धांत कैसे काम करता है। लेकिन अगर आप एक बार फिर पोपसी, रोम में चर्च पर ध्यान देते हैं, तो आप मरियम और चर्च के जीवन में मरियम के महत्व को भी बनाए रखेंगे।

और जितना अधिक आप चर्च के जीवन में मैरी के महत्व को बनाए रखेंगे, उतना ही अधिक आप पोप के पद से जुड़ेंगे। इसलिए मैरी के बेदाग गर्भाधान का सिद्धांत इस अल्ट्रामोंटानिज़्म को लाने का एक तरीका है, पोप के पद के प्रति निष्ठा स्थापित करने का एक तरीका है। हम बाद में सिद्धांत के बारे में बात करेंगे।

दूसरा काम जो उन्होंने किया वह था बहुत सारे संतों की घोषणा करना, बहुत सारे संतों को संत बनाना और चर्च में बहुत सारे संत बनाना। और यह अल्ट्रामोंटानिज़्म स्थापित करने का दूसरा तरीका है। दुनिया भर में बहुत सारे संतों की घोषणा और बहुत सारे संत बनाना ताकि लोग इन संतों को संत बनाने के लिए पोपसी की शक्ति को देख सकें और लोग देख सकें कि रोमन कैथोलिक चर्च की परंपरा कितनी समृद्ध थी।

चाहे हम इन ताकतों से कितने भी जूझ रहे हों, हमें याद रखना चाहिए कि कैथोलिक चर्च कितना समृद्ध है। तो यह दूसरा तरीका है जिससे उन्होंने इस अल्ट्रामोंटानिज़्म, कैनोनाइजेशन, चर्च में संतों की स्थापना, चर्च में संतों के नामकरण को विकसित किया। तो, तीसरा तरीका यह था कि 19वीं सदी महान मिशनरी सदी थी, लेकिन केवल प्रोटेस्टेंट के लिए नहीं।

19वीं सदी रोमन कैथोलिक चर्च के लिए एक महान मिशनरी सदी थी। तीसरा तरीका है महान मिशनरी कार्य जिसे पोप पायस IX ने स्थापित किया। मिशनरियों को भेजें।

और शायद उन मिशनरियों में सबसे ऊपर, निश्चित रूप से सबसे सक्रिय समूहों में से एक जेसुइट्स थे। लेकिन मिशनरियों को बाहर भेजो। ये मिशनरी भी पोपसी और रोमन कैथोलिक चर्च की शिक्षाओं के प्रति निष्ठा रखते थे।

तो, वे सिर्फ़ ईसाई नहीं बनाने जा रहे हैं; वे रोमन कैथोलिक ईसाई बनाने जा रहे हैं। तो, यह अल्ट्रामोंटानिज़्म का तीसरा तरीका था। नंबर चार, चौथा तरीका और वास्तव में इसे बहुत गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

और अगर आप तेजी से आगे बढ़ते हैं, तो आपने इसे 20वीं सदी में जॉन पॉल द्वितीय के साथ देखा। लेकिन नंबर चार उनकी अपनी व्यक्तिगत धर्मपरायणता के कारण था। उन्हें महान धर्मपरायण, महान प्रार्थना, ईश्वर, मसीह, मैरी के प्रति महान भक्ति के व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया था।

और वह चाहते थे कि उनकी धर्मपरायणता का उदाहरण रोमन कैथोलिकों के बीच स्थापित हो। इसलिए, उनकी धर्मपरायणता के उदाहरण को किसी भी तरह से कम नहीं आंका जा सकता है, क्योंकि उन्हें लगता था कि चर्च पर हमला हो रहा है, इसलिए वह बहुत ही विपत्तियों के बीच एक बहुत ही धर्मपरायण व्यक्ति बनने की कोशिश कर रहे थे। अगर आप बस एक मिनट के लिए तेजी से आगे बढ़ते हैं, तो मुझे लगता है कि आप जॉन पॉल द्वितीय में यही देख सकते हैं।

आपको जॉन पॉल द्वितीय याद है, है न? टेड और मुझे जॉन पॉल द्वितीय याद है। लेकिन क्या आप लोगों को जॉन पॉल द्वितीय बहुत, थोड़ा बहुत याद है? हाँ। ठीक है।

खैर, वह एक बहुत ही पवित्र व्यक्ति था, प्रत्यक्ष रूप से पवित्र व्यक्ति, प्रार्थना करने वाला एक महान व्यक्ति, अपने उपदेशों और लोगों की सेवा करने में बहुत पवित्र, और इसी तरह। तो, खैर, पवित्र, नौवां ऐसा ही था। और इसलिए वह लोगों के लिए एक आदर्श और एक उदाहरण बन गया।

तो, ठीक है। एक और काम जो उन्होंने किया, जो बहुत महत्वपूर्ण था और जिसका हम थोड़ी देर बाद भी जिक्र करेंगे, लेकिन उन्होंने एक विश्वव्यापी चर्च परिषद बुलाई। उन्होंने एक विश्वव्यापी चर्च परिषद बुलाई और मुझे बस देखने दिया।

मैंने इसे नीचे नहीं रखा। ठीक है। वर्ल्डवाइड चर्च काउंसिल को द्वितीय वेटिकन काउंसिल कहा जाता था।

इसलिए उन्होंने वर्ल्डवाइड चर्च काउंसिल का आह्वान किया। मुझे खेद है। यह प्रथम वेटिकन परिषद है, लेकिन यह द्वितीय वेटिकन परिषद नहीं थी।

पहली वेटिकन परिषद 1869 से 1870 तक चली। तो, वेटिकन परिषद। इसलिए, वे इसे वेटिकन परिषद कहते हैं।

यह चर्च के विश्वव्यापी नेताओं का एक साथ आना है। और उन्हें यह परिषद क्यों बुलानी पड़ी? हमें इस परिषद को बुलाना पड़ा ताकि हम व्यापक दुनिया के विरोध में चर्च को वास्तव में आकार दे सकें, जो चर्च को खत्म करने की कोशिश कर रही थी। इसलिए उन्होंने परिषद को प्रथम वेटिकन परिषद कहा।

और प्रथम वेटिकन परिषद बहुत महत्वपूर्ण है। अब, हमने कुछ परिषदें देखी हैं। ट्रेंट की परिषद, सुधार-पश्चात परिषद को याद करें।

याद है? हमने इस बारे में बात की थी। तो, हमने देखा है कि कैथोलिक चर्च के लिए ये विश्वव्यापी परिषदें कितनी महत्वपूर्ण हैं। वह एक परिषद बुलाता है, और हम उस परिषद के बारे में कुछ बातें बताएँगे।

ठीक है। एक और बात। अब, यह अल्ट्रामोंटानिज़्म है।

इसने रोमन कैथोलिक चर्च को चर्च के सभी दबावों और दुश्मनों के खिलाफ़ स्थापित किया। लेकिन एक और चीज़ जो उन्होंने की वह एक और सिद्धांत स्थापित करना था जिसके बारे में हम बाद में बात करेंगे। और इसे पोप की अचूकता कहा गया, 1870।

इसकी स्थापना पायस IX ने की थी। वास्तव में इसे वेटिकन परिषद में अंतिम रूप से पुष्टि की गई थी, लेकिन पोप की अचूकता। अब, क्योंकि हम पोप की अचूकता के बारे में बात करने जा रहे हैं, हम इसे यहाँ परिभाषित नहीं करेंगे।

कहने की ज़रूरत नहीं है कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत था क्योंकि इसने पोप को बहुत शक्ति दी। आप भाषा से ही पोप की अचूकता का अंदाजा लगा सकते हैं। तो, यह है।

ठीक है। एक और चीज़ जो उन्होंने इस अल्ट्रामोंटानिज़्म को स्थापित करने की कोशिश में की, वह थी रोमन कैथोलिक चर्च के अन्य राज्यों और अन्य स्थानों के साथ संबंधों को वास्तव में मज़बूत करना। ठीक है।

उदाहरण के लिए, वे पोप हैं जिन्होंने इंग्लैंड में रोमन कैथोलिक चर्च के पदानुक्रम को फिर से स्थापित किया। याद रखें कि हमने ऑक्सफ़ोर्ड आंदोलन के साथ कहा था, इंग्लैंड में पदानुक्रम की इस तरह की पुनर्स्थापना हुई थी। खैर, वे पोप थे जो उस समय पोप थे जब यह हुआ।

इसलिए, उन्हें लगता है कि अब वे मज़बूत स्थिति में आ सकते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उन्होंने चर्च को मज़बूत किया है। उन्होंने चर्च को मज़बूत किया है। उन्होंने चर्च को वैसा बनाया है जैसा कि उसका इरादा था।

इसलिए, उन्हें लगता है कि अब वे इंग्लैंड और अन्य राज्यों से बात करने और वहाँ पदानुक्रम स्थापित करने के लिए अच्छी स्थिति में हैं। ठीक है। तो यह पायस IX है।

वह दुनिया के पर्दे बंद कर देता है। एक तरह से, वह पर्दे बंद करके उस खिड़की की ओर पीठ कर लेता है, और वह सिर्फ़ चर्च को देखता है, और वह अल्ट्रामोंटानिज़्म नामक इस आंदोलन के साथ चर्च को आकार देने की कोशिश कर रहा है। तो, लियो XIII पर जाने से पहले, पायस IX के बारे में कोई सवाल? वाकई, वाकई महत्वपूर्ण पोप।

आप उसे अपने जीवनकाल में फिर से देखेंगे। तो, पायस IX, क्या आपके पास उसके बारे में कोई सवाल है? वाकई बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति। ठीक है।

ठीक है। चलिए अब लियो XIII पर वापस चलते हैं। लियो XIII दाईं ओर है, और वह 1878 में पोप था।

उन्होंने 1878 से 1903 तक पोप पायस IX का स्थान लिया। तो, ठीक है। पोप लियो XIII क्या करते हैं? वे खिड़की के पास जाते हैं और खिड़की के पर्दे खोलते हैं।

वह चाहता है कि चर्च उस खिड़की के बाहर की दुनिया के लिए प्रासंगिक हो। इसलिए, वह चाहता था कि चर्च प्रासंगिक हो। वह चाहता था कि चर्च उस दुनिया के लिए एक सार्थक सेवकाई करे जिसमें चर्च रहता था।

वह पायस IX के बिल्कुल विपरीत थे। पोप के पद पर दो और विपरीत व्यक्ति नहीं हो सकते। और जाहिर है, उन्हें पोप के रूप में चुने जाने का मतलब था कि चर्च के नेताओं को यह पसंद नहीं था कि पायस IX ने पर्दे बंद करके, दुनिया से मुंह मोड़कर, और चर्च को आकार देने की कोशिश करके चर्च को किस तरह से संभाला था।

जाहिर है, अगर उन्हें यह पसंद होता, तो वे किसी और को पोप के रूप में चुनते। लेकिन वे कुछ अलग चाहते थे, और उन्हें लियो XIII के साथ कुछ अलग मिला, इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए वह आधुनिक दुनिया के साथ समझौता करना चाहता है।

तो सवाल यह है कि वह आधुनिक दुनिया के साथ कैसे तालमेल बिठाता है? वह ऐसा कैसे करता है? मैं बस कुछ बातें बताने जा रहा हूँ। सबसे पहले, वह चाहता है कि पादरी, पादरी, पादरी और सुसमाचार के पादरी जहाँ हैं, वहाँ प्रासंगिक रहें। वह पायस IX के तहत हुई पादरी-विरोधी भावना पर काबू पाना चाहता है।

इसलिए वह चाहते हैं कि पादरी, मंत्री, पादरी उस दुनिया से जुड़ने में सक्षम हों जिसमें वे खुद को पाते हैं। अब, वास्तव में, मुझे नहीं पता कि पोप लियो XIII ने खुद पोप की अचूकता के बारे में क्या महसूस किया। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि पोप के सिद्धांत की अचूकता ने प्रोटेस्टेंट और पूर्वी रूढ़िवादी को वंचित कर दिया, और कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण कैथोलिक नेताओं को वंचित कर दिया।

और लियो XIII को इस बात का अहसास था कि इस सिद्धांत ने चर्च की मदद करने के बजाय उसे नुकसान पहुंचाया है। और इसलिए उसे इस पादरी-विरोधी भावना पर काबू पाने की कोशिश करनी पड़ी जो पहले से ही बढ़ रही थी, लेकिन फिर पोप की अचूकता का सिद्धांत सामने आया और यह और भी बढ़ गया। इसलिए लोग इसे बिल्कुल भी नहीं समझ पाए।

और इसलिए पोप लियो XIII इस तरह के पादरी-विरोधी रवैये पर काबू पाना चाहते हैं और चर्च को बेहतर और ज़्यादा प्रासंगिक तरीके से आगे बढ़ाना चाहते हैं। दूसरी चीज़ जिसमें पोप लियो

xiii अच्छे थे, वह थी कूटनीतिक संबंधों को बेहतर बनाना। अब, पायस ix ने इस बारे में थोड़ा बहुत काम किया, लेकिन वे कूटनीतिक संबंधों को बेहतर बनाने में सक्षम थे।

वह पायस ix ने जो किया था, उस पर निर्माण करने में सक्षम था। अब, यहाँ लियो xiii के साथ एक लंबी कहानी को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। लियो xiii को वास्तव में लगा कि वह उस भूमि को पुनः प्राप्त करने में सक्षम होने जा रहा है जो पिछले दिनों चर्च के स्वामित्व में थी।

इसलिए लियो xiii ने सोचा कि शायद पोप की ज़मीन इससे कहीं ज़्यादा बड़ी हो सकती है, लेकिन वह इस बात से बहुत निराश हुआ। और इसलिए एकमात्र पोप राज्य जो उसके पास आ गया वह वेटिकन था। बस यही उसके पास आ गया।

उसके पास सिर्फ वेटिकन था। इसलिए जब आप मध्ययुगीन दुनिया के पोप राज्यों और पश्चिमी यूरोप के कितने हिस्से पर मध्ययुगीन दुनिया में पोप का कब्ज़ा था, इस बारे में सोचते हैं, तो अब लियो xiii, वास्तव में, एक किताब में उसे वेटिकन का कैदी कहा गया है। क्या आप में से कोई वेटिकन गया है? क्या आप में से कोई रोम गया है? हम वेटिकन जाना चाहते हैं।

चलो हम सब मिलकर वेटिकन की यात्रा करें और वेटिकन को देखें। वैसे, वेटिकन बहुत छोटा है। मुझे इस बारे में पता लगाना चाहिए।

जब मैं व्याख्यान दे रहा होता हूँ तो कोई इसे देख सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह 100 एकड़ या उससे ज़्यादा है। यह बहुत छोटा है, लेकिन यह एक स्वतंत्र राष्ट्र है। क्या आप यह जानते हैं? आप जानते थे कि वेटिकन एक स्वतंत्र राज्य, एक स्वतंत्र राष्ट्र था।

यह रोम शहर में है, लेकिन एक बार जब आप वेटिकन में प्रवेश करते हैं, तो आप दूसरे राज्य में होते हैं। आप वेटिकन में हैं। और कितना? 109 एकड़।

109 एकड़। बस इतना ही है। हम यहाँ कुछ सौ एकड़ पर बैठे हैं, लेकिन केंद्रीय परिसर शायद 100 एकड़ का है।

तो यह गॉर्डन कॉलेज जितना ही बड़ा है, लेकिन यह एक राज्य है। इसका अपना पुलिस बल है। इसका अपना डाकघर है।

राज्य का गवर्नर पोप है, बेशक। इसलिए लियो xiii थोड़ा निराश था, लेकिन उसे जो समझ में आया, वह यह है कि इस राज्य से, मैं अन्य राष्ट्र-राज्यों से बात करने में सक्षम होने जा रहा हूँ। वेटिकन से, मैं अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, और इसी तरह से बात करने में सक्षम हो जाऊंगा।

और क्या हम कोई राजनयिक भेजते हैं? क्या हमारे पास कोई राजनयिक है जो वेटिकन जाता है? कोई जानता है? क्या हम ऐसा करते हैं या नहीं? क्या हमारे पास कोई राजनयिक है? क्या हम वेटिकन के साथ राजनयिकों का आदान-प्रदान करते हैं? इसका उत्तर हाँ है। और आप जिन राजनयिकों से परिचित हो सकते हैं उनमें से एक बोस्टन शहर के पिछले मेयर, मेयर फ्लिन हैं। मेयर बनने के बाद, वे राजनयिक बन गए, वेटिकन में राजदूत बन गए।

तो हाँ, हमारे पास वेटिकन में एक राजदूत है, और उनके पास वाशिंगटन में भी एक राजदूत है। इसलिए हम राजदूतों का आदान-प्रदान करते हैं। लेकिन हाँ, मुझे पता था, हम पता लगाने जा रहे हैं; मुझे लगता है कि बस एक मिनट में ही पता चल जाएगा क्योंकि वेटिकन पेज पर कोई है, लेकिन मेरा अनुमान है कि यह 4,000, 3,000, 4,000, 5,000 या ऐसा ही कुछ है।

वेटिकन में प्रतिदिन बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं, इत्यादि। 790. ठीक है।

मैं हैरान हूँ। मैंने सोचा था कि यह उससे भी बड़ा होगा। 798.

यह बहुत ज़्यादा लोग नहीं हैं। यह गॉर्डन कॉलेज की आधी छात्र आबादी है। 798.

जी, मैंने सोचा था कि कुछ, 3,000 या 4,000। ठीक है। यह लीजिए।

और वेटिकन की रखवाली कौन करता है? मुझे यह बताओ। इसका किसी से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन वैसे भी, वेटिकन की रखवाली कौन करता है? स्विस गार्ड वेटिकन की रखवाली करते हैं।

वे वेटिकन की रक्षा किसके द्वारा बनाई गई वर्दी में करते हैं? वर्दी अजीब है। मुझे पता है कि आप वर्दी देखने जा रहे हैं, लेकिन वर्दी अजीब दिखने वाली वर्दी है, है न? और स्विस गार्ड की उन वर्दी को किसने डिजाइन किया? माइकल एंजेलो। माइकल एंजेलो ने उन वर्दी को डिजाइन किया।

तो हाँ, यह दिलचस्प है। मैं कभी वेटिकन में नहीं गया, लेकिन मैं उस क्षेत्र में गया हूँ, सेंट पीटर चर्च और सब कुछ में गया हूँ। वैसे भी, लियो XIII के साथ जो होता है वह यह है कि वह खुद को इस तथ्य से सामंजस्य बिठा लेता है कि पोप का पद अब कभी भी उसके अपने देशों में नहीं जाएगा जैसा कि पहले हुआ करता था।

यह हमारा होगा, हम वेटिकन के मालिक हैं। यही हमारा है। यही हमारा राज्य है।

तो, वहाँ से, उन्होंने इसका सबसे अच्छा उपयोग करने की कोशिश की। और वहाँ से, उन्होंने इन सभी राजनयिक संबंधों और अन्य चीज़ों को बनाने की कोशिश की। तो, ठीक है।

लियो XIII के बारे में एक और बात, और वह यह है कि, मैं उनके अन्य योगदानों का उल्लेख करूँगा। और फिर अंत में, मैं उनके सबसे बड़े योगदान का उल्लेख करना चाहता हूँ। तो, उन्होंने जो अन्य चीज़ें कीं, जिनका हमने उल्लेख किया, वे बहुत बड़ी चीज़ें हैं, लेकिन यहाँ कुछ अन्य चीज़ें हैं जो उन्होंने कीं जिन्हें वह एक अर्थ में लोगों तक पहुँचाना चाहते थे।

एक और काम जो उन्होंने किया वह यह था कि लियो XIII ने रोमन कैथोलिकों को बाइबल का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने रोमन कैथोलिकों को बाइबल का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि बाइबल और धर्मग्रंथ न केवल पोप और पुजारियों के हाथों में हों

बल्कि लोगों के हाथों में भी हों। और वह चाहते थे कि बाइबल लोगों के हाथों में हो, और वह चाहते थे कि बाइबल की व्याख्याएँ और इसी तरह की अन्य चीज़ें भी हों।

तो, उन्होंने रोमन कैथोलिकों के लिए बाइबल खोल दी। यह खिड़की के पर्दे खोलने जैसा है। एक और काम जो उन्होंने किया वह था वेटिकन अभिलेखागार खोलना।

वेटिकन अभिलेखागार बंद कर दिया गया था। उन्होंने वेटिकन अभिलेखागार को जनता के लिए खोल दिया ताकि लोग वेटिकन अभिलेखागार में आ सकें और रोमन कैथोलिक चर्च के इतिहास पर शोध कर सकें। अब, मुझे नहीं लगता, मुझे उम्मीद नहीं है, मैं कभी वेटिकन अभिलेखागार में नहीं गया, लेकिन मुझे उम्मीद नहीं है कि सब कुछ जनता के लिए खुला है।

और मुझे लगता है कि आपको वेटिकन अभिलेखागार में जाने के लिए एक विद्वान, एक बहुत ही उच्च अनुशंसित होना चाहिए, लेकिन फिर भी, उन्होंने वेटिकन अभिलेखागार खोला। तो, ठीक है। एक और चीज जो उन्होंने की वह एंग्लिकन चर्च तक पहुंचना था।

उन्होंने वास्तव में एंग्लिकन चर्च को एड एंग्लोस टू द एंग्लिकन नामक एक पोप पत्र लिखा था। तो फिर, पोप पायस IX, जब एंग्लिकन चर्च की बात आई, तो उन्होंने क्या किया? उन्होंने खिड़की के पर्दे बंद कर दिए और एंग्लिकन चर्च की ओर पीठ कर ली। पोप लियो XIII ने क्या किया? उन्होंने खिड़की खोली, पर्दे खोले और एंग्लिकन चर्च की ओर देखा और यह देखने की कोशिश की कि उनके निकटतम, एंग्लिकनवाद के साथ उनकी क्या समानता थी, जो उनके निकटतम प्रकार के सैद्धांतिक धार्मिक, आप जानते हैं, समूह रहे होंगे।

इसलिए, खासकर तब से जब एंग्लिकन रोमन कैथोलिक बन रहे थे। ठीक है। अब, इस पर लंबी कहानी संक्षेप में, लियो XIII, वास्तव में, मुझे लगता है कि उसके दिल में, वह एंग्लिकन पादरी चाहता था।

वह एंग्लिकन पादरी नियुक्त करना चाहते थे, जो अब, बहुत से एंग्लिकन पादरी रोमन कैथोलिक पादरी बन गए, लेकिन वह, अपने दिल में, शायद चाहते थे कि एंग्लिकन पादरी रोमन कैथोलिक बनें जो विवाहित थे, लेकिन ऐसा होने वाला नहीं था। उनके दिनों में ऐसा नहीं हुआ। यह 20वीं सदी के मध्य में हुआ, लेकिन उनके दिनों में नहीं हुआ।

लेकिन किसी भी मामले में, वह वास्तव में एंग्लिकन चर्च तक पहुँचता है और चाहता है कि एंग्लिकन चर्च रोमन कैथोलिक चर्च का हिस्सा बन जाए। इसलिए, एंग्लिकन को लिखा गया पत्र, एड एंग्लोस, लियो XIII का एक महत्वपूर्ण पत्र है जो उनके इस तरह के प्रयासों को दर्शाता है। ठीक है।

अब, मैंने उनके सबसे महत्वपूर्ण योगदान को अंत तक बचाकर रखा है। तो, आइए पोप के रूप में उनके द्वारा किए गए सबसे महत्वपूर्ण काम के बारे में बात करते हैं। पर्दे बंद करके, पायस IX ने पश्चिम के औद्योगिकीकरण के विनाशकारी पहलुओं को नजरअंदाज कर दिया।

उन्होंने लोगों की गरीबी, लोगों की भयानक कामकाजी परिस्थितियों, लोगों की श्रम स्थितियों और बच्चों को फैक्ट्री सिस्टम में काम पर लगाए जाने आदि को अनदेखा कर दिया था: लंबे घंटे, कम वेतन और सब कुछ। पायस IX, पर्दे बंद करके अपने वेटिकन में रहते हुए, औद्योगीकरण की समस्याओं को काफी हद तक अनदेखा कर दिया।

लियो XIII ने जो महान योगदान दिया, वह था पर्दे खोलना और औद्योगिक पश्चिम की समस्याओं को अनदेखा न करना, साथ ही साथ औद्योगिकीकरण द्वारा उत्पन्न समस्याओं को भी अनदेखा न करना। और इसलिए, लियो XIII ने कहा, मैं चाहता हूँ कि रोमन कैथोलिक चर्च गरीबों की सेवा करे, मजदूर वर्गों की सेवा करे, और इन प्रमुख, प्रमुख शहरों में लोगों की कुछ पीड़ा को कम करे। मैं चाहता हूँ कि रोमन कैथोलिक चर्च इसमें कुछ करे।

बस एक छोटी सी कहानी जिसका इससे कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन यह ठीक है, हम समझते हैं। आप सभी न्यूयॉर्क शहर गए हैं, है न? क्या यहाँ कोई ऐसा है जो न्यूयॉर्क नहीं गया है? न्यूयॉर्क शहर नहीं, ठीक है। हमें न्यूयॉर्क शहर की यात्रा करनी चाहिए।

तो, आप सभी न्यूयॉर्क शहर गए होंगे। खैर, अगली बार जब आप न्यूयॉर्क शहर जाएँगे, तो आपको एक संग्रहालय देखना होगा। तो, इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन वैसे भी, एक संग्रहालय है जिसे आपको देखना होगा, और वह है लोअर ईस्ट साइड टेनेमेंट संग्रहालय।

क्या आपने इसे देखा है? क्या आप वहाँ गए हैं? क्या यह शानदार नहीं है? वे शानदार हैं, और हम फिर से वहाँ जा रहे हैं। यह लोअर ईस्ट साइड टेनेमेंट म्यूजियम है। जब आप न्यूयॉर्क शहर में हों तो इसे देखना न भूलें क्योंकि 19वीं और 20वीं सदी की शुरुआत में, शायद 1930 के दशक तक, न्यूयॉर्क शहर का लोअर ईस्ट साइड पृथ्वी पर सबसे घनी आबादी वाला स्थान था।

लाखों लोग लोअर ईस्ट साइड में फंस गए थे, कारखानों में इन भयानक, भयानक परिस्थितियों में काम कर रहे थे। बच्चे कारखानों में काम कर रहे थे, लोग अपने घरों में काम कर रहे थे, और लोअर ईस्ट साइड टेनेमेंट म्यूजियम ने पारिवारिक जीवन को फिर से बनाया जैसा कि औद्योगिकीकरण के माध्यम से सदी के अंत में न्यूयॉर्क के लोअर ईस्ट साइड में था। और आप इसमें जाते हैं; आप चुन सकते हैं। वे आपको कई अलग-अलग दौरे देते हैं क्योंकि उन्होंने इनमें से कुछ टेनेमेंट को अपने कब्जे में ले लिया है, और उन्होंने उन्हें लगभग वैसा ही रखा है जैसा वे थे।

मेरी पत्नी और मैंने एक टूर लिया; सभी टूर लेने में बहुत समय लगता, लेकिन मेरी पत्नी और मैंने एक यहूदी परिवार का टूर लिया जो काम कर रहा था। वे चौथी मंजिल पर थे। वहाँ तीन बहुत छोटे कमरे थे।

यह चार या पाँच लोगों का परिवार था। साथ ही, दिन के समय, कपड़े सिलने और अन्य काम करने के लिए मजदूरों को भी मकान में आना पड़ता था। शौचालय बेसमेंट में हैं, बेसमेंट में पानी की व्यवस्था है, गर्मियों में एयर कंडीशनिंग नहीं है और सर्दियों में बहुत कम गर्मी होती है।

यह देखना बहुत ही दुखद है कि 19वीं सदी और सदी के अंत में लोग कैसे रहते थे और काम करते थे। मेरा मतलब है, बस इसके लिए एक दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए, लोअर ईस्ट साइड

टेनमेंट संग्रहालय में जाएँ और इसे देखें। इसलिए धन्यवाद, रूथ, मुझे प्रोत्साहित करने के लिए क्योंकि यह बहुत बढ़िया है।

यह बहुत बढ़िया है। और जब आप इसे देखेंगे तो आप बार-बार यहां आएंगे। और आपको यकीन नहीं होगा कि लोग इस तरह से भी रह सकते हैं।

यह बहुत भयानक था। लेकिन फिर भी, कुछ परिवारों ने इसे ठीक कर लिया, दूसरों ने नहीं, बेशक, लेकिन अपराध और बुराई। लेकिन लियो XIII इसी तरह का मंत्रालय चाहता था।

वह चाहते थे कि चर्च उन लोगों की अनदेखी न करे। वह खिड़कियाँ खोलना चाहते थे, और औद्योगिक पश्चिम के लिए कहना चाहते थे, हमें इसे ठीक करना है। तो, लंबी कहानी संक्षेप में, 19वीं सदी के सबसे प्रसिद्ध लेखन में से एक लियो XIII द्वारा है, और इसे रेरम नोवारम कहा जाता है।

यह उनका सबसे प्रसिद्ध विश्वकोष था, न्यू थिंग्स, न्यू ऑर्डर, और रेरम नोवारम। इसलिए, जब आप 19वीं सदी का अध्ययन कर रहे हों, तो याद रखें कि वह 1903 तक पोप थे। हम अभी भी वास्तव में 19वीं सदी में थे, लेकिन जब आप 19वीं सदी का अध्ययन कर रहे हैं, तो आप रेरम नोवारम को पढ़ रहे होंगे क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है।

ठीक है, अब रेरम नोवारम के कुछ पहलू हैं जिनके बारे में हम बात करना चाहते हैं। और इसलिए, हमें अगले बुधवार को वापस आने पर उनके बारे में बात करनी होगी। तो, शुक्रवार और सोमवार को, मेरे पास पहले लॉस एंजिल्स और फिर न्यूयॉर्क है।

तो, यह एक व्यस्त समय होने जा रहा है, लेकिन मैं आप लोगों के बारे में सोचूंगा और इस घंटे के दौरान आप क्या काम कर रहे हैं, इस बारे में सोचूंगा।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 18 है, 19वीं सदी का कैथोलिक धर्म।